बाल साहित्य माने क्या?

बाल साहित्य का अभिप्राय बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य से रहा है। इसके अंतर्गत इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी है किसी कहानी या कविता मात्र में बच्चों के होने से वह बाल साहित्य नहीं हो जाता। इसके लिए जरूरी है कि वह बच्चों के जीवन से जुड़े अनुभवों, उनके द्वन्द्व एवं उनकी कल्पनाओं आदि को ध्यान में रखकर लिखा गया हो। इससे यह बात उभर कर आती है कि बच्चों के साहित्य पर विचार करने के लिए यह जरूरी है कि हमारे मन में बच्चों व बचपन के बारे में एक समझ हो। जिसमें बच्चे को एक जागरूक व जिज्ञासु इंसान के रूप देखना, बाल विकास से जुड़े मुद्दों को समझना व समाज को समझना आदि बातें इसमें शामिल हैं।

अगर हम इस दृष्टि से देखें तो यह बात समझ में आती है कि दुनिया में लिखित रूप से बाल साहित्य की शुरुआत अठारहवीं शताब्दी के दौरान हुई। इससे पहले का अधिकतर साहित्य मौखिक परंपरा का साहित्य था। उसमें बच्चों व बड़ों के लिए कोई विभाजन नहीं था। रामायण व महाभारत की कथाएँ, जातक कथाएँ, पंचतन्त्र की कथाएँ, लोक कथाएँ आदि सभी के सुनने के लिए थीं। इसी तरह पश्चिम में भी एसेप फेबिल्स, गुलीवर्स ट्रैवल्स व राबिन्सन क्रूसो जैसी रचनाएँ भी सभी के लिए थीं। इन पारंपरिक रचनाओं में अधिकतर रचनाएँ नैतिक मूल्यों व उपदेशों पर ही आधारित थीं।

इसके उपरांत पश्चिम में जब जान लॉक, कमेनियस व रूसो जैसे विचारकों ने भी बच्चों व उनकी शिक्षा के बारे में सोचना शुरू किया तब बच्चों के लिए अलग से लिखे जाने के बारे में सोच–विचार की शुरुआत हुई। परंतु उस दौरान भी बच्चों के बारे में समझ एक खाली स्लेट की ही थी। इसके साथ लिखी जानेवाली रचनाएँ भी समाज के उच्च वर्ग के बच्चों के लिए ही थीं। इन रचनाओं का मुख्य उद्देश्य भी बच्चों को नैतिक उपदेश देना या शिष्टाचार सिखाना ही था।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान ही जॉन न्यूबेरी ने बच्चों के लिए अलग से साहित्य के बारे में विचार दिया तथा उन्होंने बच्चों के लिए चित्रात्मक पुस्तकें भी लिखीं। इस प्रकार ज्यों –ज्यों बच्चों के बारे समझ गहरी हुई व प्रिंटिंग का विकास हुआ। उसके साथ ही बाल साहित्य भी विकसित हुआ तथा भिन्न –भिन्न प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित होनी शुरू हुईं। चित्र पुस्तकों का प्रचलन भी शुरू हुआ। सिर्फ किताबी उद्देश्यों को पूरा करने का ही मकसद नहीं है उसके साथ–साथ पढ़ने के आनंद से भी जोड़ा गया है।

अगर हम अपने देश में भी लिखित बाल साहित्य की बात करें तो इसकी शुरुआत बीसवीं शताब्दी के दौरान ही मानी जा सकती है। इसके अंतर्गत रची जाने वाली अधिकतर सामग्री पर अगर हम गौर करेंगे तो हमें उस दौरान के राजनीतिक व सामाजिक संदर्भ को भी समझना होगा। इस समय के हिन्दी लेखक साहित्य की रचना को एक आत्मविश्वासी और अपनी सांस्कृतिक धरोहर से परिचित

समाज का निर्माण मानता था। देशी संस्कृति में गर्व और आत्मनिर्भरता की भावना से ओत –प्रोत साहित्य देश की आज़ादी के संघर्ष में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।

उस समय की अधिकतर रचनाएँ देशभक्ति व नैतिकता से ही केन्द्रित रही हैं जिन्हें हम अपने स्कूली दिनों के दौरान अपनी पाठ्यपुस्तकों में भी पढ़ते रहे हैं। उस दौरान के साहित्य में कहीं – कहीं आज़ादी के संघर्ष के माहौल में अडिग और आत्मविश्वासी बच्चों के चित्रण को भी देखा जा सकता है। ऐसी ही छवि का अंकन 1933 में प्रेमचन्द द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' में मिलता है। यह कहानी बच्चे की स्वतंत्र रूप से सोचनेवाले एक आत्मविश्वासी बच्चे की छवि को दर्शाती है। बच्चे की यह छवि ही बच्चों के लिए अच्छे साहित्य का आधार के रूप में देखी जाती है।

आज़ादी के उपरांत तथा प्रकाशन व्यवस्था में परिवर्तन के साथ लोगों की सांस्कृतिक चेतना भी बदली। महानगरीय संस्कृति का विकास हुआ। इसके अंतर्गत बच्चे को एक नन्हे वयस्क की तरह ही देखा गया। इससे बच्चों के पालन –पोषण और विकास के प्रतिमानों में बदलाव आया। इन सबका बच्चों के साहित्य व उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके बीच प्रतियोगिता की भावना को बढ़ावा मिला। उनसे यह अपेक्षा की जाने लगी कि वे जल्दी –जल्दी पढ़ना लिखना सीखें और दूसरों से आगे निकलें। इस तरह की सोच बच्चों की किताबों में भी आसानी से देखी जा सकती है जिनमें बच्चों की जगह बड़े ही सोचते हैं। उनकी सोच ही हावी दिखाई देती हैं।

धीरे –धीरे हमारे यहाँ भी बच्चों की शिक्षा में नए विचारों के साथ बाल साहित्य की समझ में बदलाव के प्रयास किए जा रहे हैं। आज बच्चों को ध्यान में रखकर अच्छी किताबें भी प्रकाशित हो रही हैं। इन किताबों का उद्देश्य बच्चों को पढने का आनंद लेना कहा जा सकता है। इन्हें हमें पहचानना होगा। इस दृष्टि से ही बच्चों के साहित्य को देखा जाना चाहिए। इसके बारे हम आगे पढ़ेंगे।

अब हम बच्चों के साहित्य से जुड़ी भिन्न –भिन्न विधाओं पर संक्षेप में विचार करेंगे –

चित्र–पुस्तकें

वर्तमान समय में बच्चों की किताबों के अंतर्गत चित्र–पुस्तकें काफी मात्रा में प्रकाशित हो रही हैं। ये पुस्तकें बच्चों के लिए रुचिपूर्ण भी मानी जाती हैं। इन किताबों में चित्रों के साथ लिखित पाठ्य भी होता है। इसमें चित्रों व पाठ्य की बराबर की भागीदारी होती है। आयु वर्ग के अनुसार चित्र व पाठ्य का अनुपात घटता–बढ़ता है। बच्चों की शुरुआती अवस्था की किताबों में केवल चित्रों में भी कहानी कही गई होती है। जैसे 'आम की कहानी', 'बाजार की सैर', 'रेलगाड़ी' आदि। इसके अतिरिक्त चित्र पुस्तकों में 'लालू पीलू', 'मैं भी', 'चूहे को मिली पेंसिल', 'बिल्ली के बच्चे', 'बुढ़िया की रोटी', 'प्यासी मैना', 'कजरी गाय झूले पर' आदि शामिल। इन किताबों का उपयोग बच्चों को पढ़ना सिखाने में भी प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

लोक कथाएँ

लोक साहित्य मुख्यतः मौखिक परंपरा की उपज है। इसके अंतर्गत हम लोककथाओं, परीकथाओं व अन्य पारंपरिक कथाओं को रख सकते हैं। इन कथाओं को हम दादी–नानी, रामायण, महाभारत, पंचतन्त्र व जातककथाओं के माध्यम से सुनते रहे हैं। इन कहानियों में उस दौरान की प्रचलित मान्यताओं , मूल्यों व सामाजिक व्यवस्था के बारे में पता चलता है। आजकल कुछ लोककथाएँ चित्रात्मक रूप से नए कलेवर में भी प्रकाशित हो रही हैं। इन कहानियों में जहाँ कथात्मकता दिखाई पड़ती है वहीं इनमें कहीं वर्तमान दृष्टि से कुछ रूढ़िवादी चरित्र भी दिखाई पड़ते हैं। जैसे कौए का चरित्र चालाक ही होगा। इस तरह से जाति व लैंगिक भेदभाव भी दिखाई पड़ेंगे। बच्चों के साथ उपयोग के लिए इन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

कविताएँ

बाल कविताएँ अपनी लय, बिंब व शब्दों के खेल से बच्चों के बीच अपनी पहचान बनाती हैं। इन कविताओं को बच्चे गाते – गुनगुनाते हैं। शब्दों में तोड़–मरोड़ भी करते हैं। इनकी जगह नए शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। हिन्दी में बच्चों के लिए बाल कविता लेखन में निरंकार देव सेवक, श्रीप्रसाद, सुभद्रा कुमारी चौहान, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना व प्रयाग शुक्ल आदि लोगों के नाम लिए जा सकते हैं। इन्होंने बच्चों के मनोभावों का ध्यान में रखकर अच्छी बाल कविताओं का सृजन किया है। बाल कविताओं के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महके सारी गली–गली' नामक पुस्तक को देखा जा सकता है।

गतिविधि पुस्तकें

गतिविधि पुस्तकें हमारे देश में बच्चों के लिए नई विधा की पुस्तकें है। इन पुस्तकों का विकास विगत दो दशकों के दौरान ही हुआ है। इन पुस्तकों के अंतर्गत यह प्रयास होता है कि खेल–खेल में बच्चों की रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न खेल, गतिविधियों के द्वारा कुछ रचने के मौके दिए जाएँ। इन पुस्तकों में 'खेल–खेल में विज्ञान', 'कबाड़ से जुगाड़', 'विज्ञान के प्रयोग', 'गणित के खेल', 'ओरेगेमी' आदि पर कई सचित्र पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

कथेतर साहित्य

बच्चों के लिए कहानी–कविता के अलावा अन्य जानकारीपरक पुस्तकें, यात्रा वर्णन, जीवनियाँ आदि पुस्तकों को कथेतर साहित्य के अंतर्गत रखा जाता है। जानकारीपरक पुस्तकों में किसी अवधारणा या विषयवस्तु को बच्चों को ध्यान में रखकर सहज ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। हाल के वर्षों में इस विधा के अंतर्गत कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

किशोर साहित्य

बाल विकास की दृष्टि से देखें तो किशोरावस्था के दौरान बच्चों की सोच व उनके मुद्दों में काफी बदलाव आ जाता है। इस दृष्टिकोण से इस आयु वर्ग के लिए अलग से साहित्य की जरूरत पड़ती है। इस आयु वर्ग के बच्चे साहसिक कथाएँ, बाल उपन्यास, जासूसी कथाएँ, जीवनी, आत्मकथा व जानकारीपरक पुस्तकों आदि में भी रुचि लेने लगते हैं। हालाँकि इस आयु वर्ग के लिए हिन्दी में उद्देश्यपरक साहित्य कम ही रचा गया है। इसके अंतर्गत सत्य प्रकाश अग्रवाल 'एक घर पाँच निडर' का उल्लेख किया जा सकता है। किशोरों के लिए कुछ अनूदित पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं जैसे – 'स्वामी के दोस्त', 'रस्टी के कारनामे' आदि देखे जा सकते हैं।

लेखक– कमलेश चन्द्र जोशी, भाषा और भाषा शिक्षण–2 छत्तीसगढ़ डी.एड. पाठ्यक्रम में प्रकाशित।